International Journal of Home Science 2019; 5(1): 28-29

International Journal of Home Science

**ISSN:** 2395-7476
IJHS 2019; 5(1): 28-29
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 08-11-2018
Accepted: 11-12-2018

**तब्बसुम खान**
शोध छात्रा, राम कृष्ण धर्माथ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

**नीलमा कुँवर**
पर्वेक्षक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

**Correspondence**
**तब्बसुम खान**
शोध छात्रा, राम कृष्ण धर्माथ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

# बच्चों के नैतिक विकास में माता–पिता की भूमिका

## तब्बसुम खान एवं नीलमा कुँवर

**सारांश**
नैतिक विकास न तो जैविक है और ना ही आर्थिक, बल्कि इस विकास की कसौटी मानव आनंद है। विवेक और नैतिक मूल्यों का विकास समाजीकरण की प्रकिया में तत्काल ही प्रारम्भ हो जाता है। समाज के नैतिक आदर्श, सामाजिक संस्थायें और परम्परायें इन तीनों का सामंजस्य करना ही नैतिक जगत् नैतिक विकास है। बहुत से मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि प्रतिरूपण की प्रकिया से पुरस्कार और दण्ड का बोध होता है और बालकों को सही गलत का बोध कराते हैं। यह प्रकिया अनवरत चलती रहती है।

**कुटशब्दः** नैतिक विकास, भूमिका

## प्रस्तावना
अभिभावक और समाज बाह्य नैतिकता बालक को देते हैं और परिपक्वता प्राप्त करने के लिए बालक को मूल्यों का एक व्यवस्थित संकलन बनाने के लिए इन सिद्धांतों को विश्लेशित कर स्वीकार करना पड़ता है। नैतिक विकास बालक के सर्वांगीण सृजनात्मक व्यक्तित्व का प्रतिफलन होते हैं। बालक में आत्मशक्ति, मानसिक दृढ़ता, कर्त्तव्यपरायणता तथा धर्मपरायणता, ज्ञान वृद्धि, अभ्यास, नैतिक उपदेश, अनुकरण, निर्देश, दण्ड और पुरस्कार, प्रशंसा और निंदा, आदर्श प्रोत्साहन, रूचियों का विकास, स्नेह आदि के द्वारा नैतिक विकास सतत् रूप से अनवरत चलता रहता है। बालक में नैतिक विकास, नैतिक ज्ञान, नैतिक सम्बोध, नैतिक तर्क एवं नैतिक व्यवहार की परस्पर अंर्तक्रिया द्वारा होता रहता है। नैतिक ज्ञान और नैतिक सम्बोध का विकास बालक के भीतर आयु और परिपक्वता के साथ होता है। इसके अभाव में बालक प्रयत्न व भूल द्वारा नैतिक व्यवहार संपादित करता है। बालक में नैतिक निर्णय व नैतिक व्यवहार में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

## अध्ययन के उद्देश्य
1. उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक स्तर का अध्ययन करना।
2. नैतिक विकास में लैंगिक विभिन्नता को ज्ञात करना।

## अध्ययन पद्धति
उत्तर प्रदेश के फैजाबाद (अयोध्या) जिला का चयन किया गया है। इसमें अयोध्या जिले के शासकीय और अशासकीय विद्यालयों का चयन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा की गयी सूची से किया गया है। इसमें कुल 300 बालक–बालिकाओं (150 बालक एवं 150 बालिकायें) का चयन किया गया है इसमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण उपकरण Alpana Sengupta and Arun Kumar – Moral Values Scale (MVS) और R.I. Bharadwaj – Socio-economic Status Scale लगाये गये हैं जिसमें सांख्यिकीय उपकरण मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन का इस्तेमाल किया गया है।

## परिणाम

**सारिणी 1:** बालक एवं बालिकाओं के अभिभावकों के शैक्षणिक स्तर के आधार पर वर्गीकरण संख्या=300

| शिक्षा का स्तर | बालक | | बालिका | | योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| प्राथमिक शिक्षा | 28 | 18.7 | 12 | 8.0 | 40 | 13.3 |
| हायर सेकेण्ड्री | 40 | 26.6 | 40 | 26.7 | 80 | 26.7 |
| उच्च शिक्षा | 82 | 54.7 | 98 | 65.3 | 180 | 60.0 |
| योग | 150 | 100.0 | 150 | 100.0 | 300 | 100.0 |

घर बच्चे के लिए स्कूल की सीढ़ी होता है और माता–पिता उसके शिक्षक। वे न केवल बच्चे को अपने प्रगतिशील पथ में मार्गदर्शन करते हैं बल्कि उनके कार्यों से उचित व्यवहार भी प्रदर्शित करते हैं।

**सारिणी 2:** उत्तर बाल्यावस्था के बालक एवं बालिकाओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य प्रतिशत प्रदर्शन संख्या=300

| सामाजिक आर्थिक स्तर | बालक | | बालिकायें | | योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत | आवृत्ति | प्रतिशत |
| निम्न | 30 | 20.0 | 49 | 32.67 | 79 | 52.67 |
| मध्यम | 69 | 46.0 | 46 | 30.66 | 115 | 76.66 |
| उच्च | 51 | 34.0 | 55 | 36.67 | 106 | 70.67 |
| योग | 150 | 50.0 | 150 | 50.0 | 300 | 100.0 |

उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर 34 प्रतिशत बालक एवं 37.67 प्रतिशत बालिकायें मध्यम आर्थिक स्तर के 46.0 प्रतिशत बालक एवं 30.66 प्रतिशत बालिकायें एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के 20. 0 प्रतिशत बालक एवं 32.67 प्रतिशत बालिकायें पाई गयीं।

**तालिका 3:** बच्चों द्वारा अभिभावकों का कहना माना संख्या=300

| क.सं. | विकल्प | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | कभी नहीं | 15 | 5.0 |
| 2. | कभी – कभी | 243 | 84.7 |
| 3. | सदैव | 31 | 10.3 |
| | योग | 300 | 100.0 |

माता–पिता बच्चे के सीखने की पहली सीढ़ी हैं। माता–पिता अपने बच्चे को जो भी सिखाते हैं हैं वह वैसा ही करता है। लेकिन जब उसकी दूसरी सीढ़ी स्कूल शुरू हो जाता है तब वह और बच्चों के सम्पर्क में आता है तब वह अपने माता–पिता की कुछ बातें मानता है और कुछ के लिए विरोध करता है। तब माता–पिता को चाहिए कि वह बच्चे पर क्रोधित ना हो बल्कि उसे प्यार से समझायें इसलिए अभिभावक अपने बच्चे का पहला शिक्षक होता है।

## निष्कर्ष

बच्चों के नैतिक विकास में माता–पिता की अहम भूमिका होती है। माता–पिता ही प्रथम सीढ़ी है जो घर में बच्चों के अन्दर नैतिक संस्कार डालते हैं जिससे वह आगे चलकर समाज में इन्हीं संस्कारों को प्रदर्शित करता है।

## सुझाव

बच्चों को पढ़ाई के साथ–साथ महापुरूशों के बारे में भी पढ़ाना चाहिए जैसे कि स्वामी विवेकानन्द, महान संत तुलसीदास जी, संत कबीर आदि इससे बच्चों पर उनके संस्कारों का असर पड़ता है।

## संदर्भ


1. Grusec, Joan, E. The development of moral behaviour and conscience from a socialization perspective. Killen, Melanie (Ed.); Smetana, 2006.
2. Marbuah D. Influence of parental income and educational attainment on children's years of schooling: Case of Ghana, 2016. http://urn.kb.se/resolve?urn=urn:ubn:se:uu:diva-XXXXXX